International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 02(I), April - June, 2022, pp.62-67

किशोरों की सांवेगिक बुद्धिलब्धि एवं बुद्धिलब्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन

प्रियंका चौहान*
डॉ. (श्रीमती) अंजू टिन्ना**

सार

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में किशोरों की सांवेगिक बुद्धिलब्धि एवं बुद्धिलब्धि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया है, अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान विधि की सर्वेक्षण विधि का चयन किया है। किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिलब्धि का अध्ययन करने के लिए प्रो. एन. के. चड्डा एवं दलीप सिंह का सांवेगिक बुद्धि परीक्षण तथा विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि का अध्ययन करने के लिए डॉ. एस. एस. जालोटा का सामूहिक साधारण योग्यता परीक्षण का प्रयोग किया है। न्यादर्श हेतु उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक स्तर का अध्ययन करने के लिए 40 विद्यालयों जिनमें 20 राजकीय और 20 गैर–राजकीय विद्यालयों के 14 से 17 वर्ष के विद्यार्थियों का चुनाव किया गया। अध्ययन हेतु चार परिकल्पनाएं निर्मित की गई तथा निष्कर्ष में पाया गया कि छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि की अपेक्षा अच्छी होती है। छात्रों एवं छात्राओं की बुद्धि लब्धि के स्तर में कोई खास अन्तर देखने को नहीं मिला। किशोरों (छात्र–छात्राओं) की सांवेगिक बुद्धि तथा बुद्धि लब्धि के अध्ययन के उपरान्त हमें यह ज्ञात होता है कि उनके बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। किशोरों में सांवेगिक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन के उपरान्त यह ज्ञात होता है कि इन दोनों के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सांवेगिक बुद्धि लब्धि, बुद्धि लब्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन के उपरान्त यह ज्ञात होता है कि इन तीनों के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शब्दकोशः *किशोर, सांवेगिक बुद्धिलब्धि, बुद्धिलब्धि, शैक्षिक उपलब्धि।*

प्रस्तावना

गीता में कहा गया है, ''सा विद्या विमुक्ते'' अर्थात् शिक्षा वही है जो हमें बंधनों से मुक्त करे और हमारे हर पहलु का विस्तार करे।

शिक्षा प्रकाश का वह स्त्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ प्रदर्शन करती हैं शिक्षा से ही हमें इस जग में सुख, समृद्धि एवं सुयश की प्राप्ति होती है तथा परलोक में मोक्ष। इसलिए ज्ञान को मनुष्य का तीसरा चक्षु कहा गया है। शिक्षा के प्रकाश से ही हमारे जीवन के सभी संशयों का उन्मूलन एवं समस्त कठिनाईयों का निवारण होता है और जीवन की वास्तविकता को समझने की शक्ति उत्पन्न होती है। मानव विकास में शिक्षा की आधारभूत भूमिका है। बालक की मूल प्रवृत्तियों का शोधन कर उन्हें समाज का एक उपयोगी अंग बनाने का कार्य शिक्षा द्वारा ही किया जाता है। पारिवारिक वातावरण में बालक का शारीरिक विकास, सामाजिक, सांवेगिक, भाषा, नैतिकता आदि के विकास हेतु उसे शिक्षा ग्रहण करवाई जाती है। विद्यालय

* शोधार्थी (शिक्षा विभाग), महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान।
** (रीडर) पर्यवेक्षणाधी, शिक्षा स्नातकोत्तर विभाग, राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, बीकानेर, राजस्थान।

वातावरण में उसे मानसिक, बौद्धिक, चिन्तन, तर्क, कल्पना, भाषा, ज्ञान के द्वारा ही बालक का सर्वांगीण विकास होता है। अर्थात् शिक्षा वह माध्यम है जिससे व्यक्ति अपने व्यवहार में समुचित परिवर्तन लाने का प्रयत्न करता है। व्यक्ति का व्यवहार ही उनके व्यक्तित्व का निर्धारण करता है। अतः यह माना गया है कि व्यक्तित्व एक ऐसा सम्प्रत्यय हैं जिसने व्यक्ति की समस्त मनोदैविक विशेषताओं को सम्मिलित किया जाता है, मानव को अन्य प्राणियों की तुलना में अनेक मानसिक योग्यताओं से सम्पन्न माना जाता है। जिसके फलस्वरूप वह एक विवेकशील प्राणी है। परन्तु सभी मनुष्यों की मानसिक योग्यता एक समान नहीं होती उनमें व्यक्तिगत विभिन्नताएं पाई जाती है।

मानव को विकास की तीन अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है। शैशवावस्था, बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था जिसके बाद वह प्रौढ़ता को प्राप्त करता है। शिशु के जन्म लेने के उपरान्त की अवस्था को शैशवावस्था कहते है। शैशवावस्था के बाद बाल्यावस्था आरम्भ होती है। यह बालक के व्यक्तित्व के निर्माण की अवस्था होती है। बाल्यावस्था के समापन अर्थात् 13 वर्ष की आयु से किशोरावस्था आरम्भ होती है। इस अवस्था को तनाव और तुफान की अवस्था कहा जाता है। व्यक्ति की व्यक्तिगत विभिन्नताएं उसके शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक विकास में विभिन्नता के कारण होती है।

मानव व्यवहार के तीन पक्ष है –

1. ज्ञानात्मक पक्ष 2. भावात्मक पक्ष 3. क्रियात्मक पक्ष

उपर्युक्त तीनों पक्षों के सन्तुलित विकास पर मानव का अस्तित्व निर्भर होता है। मानव को विकास की कई अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है। इनमें से किशोरावस्था सबसे विचित्र एवं जटिल अवस्था होती है। इसका काल 12 से 18 वर्ष तक रहता है। इस समय किशोरों में शारीरिक वृद्धि एवं विकास, संवेगात्मक, सामाजिक बौद्धिक, नैतिक एवं धार्मिक, यौन सम्बन्धी विकास अपनी चरम सीमा पर होते हैं। यह जीवन का सबसे कठिन काल माना जाता है। यह काल बाल्यावस्था तथा प्रौढ़ावस्था के बीच का सन्धिकाल है, अर्थात् बालक इन दोनों अवस्थाओं में रहता है।

किशोरावस्था

किशोरावस्था के लिये आंग्ल भाषा में एडोलेसेन्स शब्द का प्रयोग किया जाता है। इस शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के क्रिया पद एडोलेसीअर में हुई है, जिसका अर्थ होता है वृद्धि होना। इस अर्थ में किशोरावस्था को अत्यधिक वृद्धि और विकास की अवस्था जाना और समझा जाता है। वृद्धि और विकास के सभी आयामों को लेकर इस अवस्था में बालक और बालिकाओं में आश्चर्यजनक वृद्धि, विकास और परिवर्तन दृष्टिगोचर होते है। इस अवस्था की सबसे बड़ी विडम्बना यह होती है कि बालक स्वयं को बड़ा समझता है और बड़े उसे छोटा समझते है। किशोरावस्था के बारे में चर्चा करने से पूर्व यह जानना अत्यन्त आवश्यक है कि किशोर किसे कहा जाए? मनोवैज्ञानिकों में किशोरावस्था के आरम्भ को लेकर काफी मतभेद पाया गया है। तकनीकी दृष्टि से देखा जाए तो यह कहना उचित होना कि जब बालक या बालिका में यौन संबंधी परिपक्वता के दृष्टिकोण से सन्तान उत्पन्न करने की क्षमता उत्पन्न हो जाए तो उन्हें किशोर कहना प्रारम्भ कर देना चाहिए।

किशोरावस्था में विकास के विभिन्न आयाम

किशोरावस्था में विकास के विभिन्न आयाम पाये जाते है जो निम्न है–

- शारीरिक विकास
- मानसिक विकास
- सामाजिक विकास
- सांवेगिक विकास
- भाषा का विकास

- **शारीरिक विकास** : इस अवस्था में शरीर के सभी आन्तरिक और बाह्य अवयव अत्यधिक तेजी से वृद्धि और विकास को प्राप्त करते है और लगभग सभी ग्रन्थियां पूरी तरह से अपना कार्य प्रारम्भ कर देती है।
- **मानसिक विकास :** इस अवस्था में बुद्धि अपनी चरम सीमा तक पहुँचने का प्रयास करती है तथा तार्किक चिन्तन, सूक्ष्म और गहन विचार शक्ति, एकाग्रता आदि सभी मानसिक शक्तियां पर्याप्त विकसित हो जाती है।
- **सामाजिक विकास :** किशोरावस्था सामाजिक संबंधों के अधिक विकसित होने और मेलजोल बढ़ाने का समय है। इस समय किशोर का सामाजिक दायरा भी बालक की अपेक्षा अधिक विस्तृत होता है।
- **सांवेगिक विकास :** संवेगात्मक रूप से किशोर पर्याप्त विकसित हो जाता है। उसमें चिंता, भय, प्रेम, ईर्ष्या और क्रोध आदि सभी संवेग अपने विकास के चरम पर पहुँच जाते हैं।
- **भाषा विकास :** इस अवस्था तक आते–आते किशोरों में भाषा का विकास पूर्ण हो जाता है तथा उसे अधिक से अधिक नये ज्ञान के सृजन की अभिलाषा रहती है।

किशोरावस्था में बालक की मनःस्थिति एक शिशु की भांति अस्थिर होती है, इस समय में बालक इतनी तेजी से परिवर्तन होते है कि उसके विचारों, भावनाओं में स्थिरता नहीं रहती। किशोर का जीवन भावनात्मक होता है। उसमें संवेगों का उतार चढ़ाव इतनी तीव्र गति से होता है कि वह स्वयं भी नहीं समझ पाता। संवेगों के आवेश में आकर वह कई बार असम्भव एवं असाधारण कार्य करने का संकल्प कर डालता है। कभी–कभी उसमें अदम्य उत्साह देखने को मिलता है तो कभी–कभी वह घोर निराशा युक्त व हतोत्साहित दिखाई देता है। किशोर की मानसिक स्थिति एवं उसकी कार्यक्षमता को सबसे अधिक संवेग की प्रभावित करते हैं।

संवेगात्मक बुद्धि

संवेगात्मक बुद्धि मानवीय विकास और वृद्धि का एक अति आवश्यक पहलू है। भय, प्रेम, क्रोध, घृणा आदि संवेग बालक के विकास ओर संवेगात्मक व्यवहार ना केवल उसकी शारीरिक वृद्धि और विकास को प्रभावित करता है बल्कि बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक और सौन्दर्यबोध के विकास पर भी यथेष्ट प्रभाव डालता है। संवेगात्मक बुद्धि के प्रत्यय को लोकप्रिय बनाने का श्रेय अमेरिकन मनोवैज्ञानिक ''डेनियल गौलमैन'' को जाता है।

सेलोवे के शब्दों में, ''संवेगात्मक बुद्धि को एक ऐसी क्षमता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिससे चार विभिन्न रूपों में संवेगों को उचित दिशा देने में मदद मिले जैसे संवेग विशेष का प्रत्यक्षीकरण करना, उसका अपनी विचार प्रक्रिया में समन्वय करना, उसे समझना तथा उसका प्रबंध करना।''

संवेगात्मक बुद्धि के तत्व

डेनियल गोलमैन ने भावनात्मक बुद्धि के पांच तत्व बताये है जो निम्न है–

- स्व. जागरूकता
- सामाजिक जागरूकता
- स्वनियमन
- आत्म अभिप्रेरण
- सहानुभूति या संवेदना

सांवेगिक बुद्धिलब्धि

सांवेगिक बुद्धिलब्धि हमारी भावनाओं से जुड़ी है। इसकी मदद से हम खुद अपनी भावनाओं और दूसरों की भावनाओं को समझते है और उन्हें समायोजित करते है। सांवेगिक बुद्धि लब्धि आपस में अच्छे रिश्ते बनाने और सही वक्त पर सही तरीके से अपने आप को प्रस्तुत करने में हमारी मदद करता है।

बुद्धिलब्धि

बुद्धिलब्धि किसी बालक में उपस्थिति बुद्धि की मात्रा का मापन है। इस विधि के द्वारा हम बालक की वास्तविक उम्र एवं मानसिक उम्र की सहायता से उनकी बौद्धिक क्षमता का मापन करते हैं। बुद्धिलब्धि का जनक स्टर्न को माना जाता है तथा बुद्धिलब्धि मापन के जनक टर्मन को माना जाता है।

बुद्धिलब्धि का सूत्र

बुद्धिलब्धि = मानसिक आयु/वास्तविक आयु ग 100

शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षणिक क्षेत्र में विद्यार्थियों द्वारा अर्जित ज्ञान का मूल्यांकन उनकी शिक्षा क्षेत्र में उपलब्धि का द्योतक होता है। उपलब्धि परीक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों का किसी कार्य–क्षेत्र में अर्जित की जाने वाले ज्ञानात्मक स्तर का मापन किया जा सकता है। इसमें बुद्धि के प्रयोग करने की शक्ति की परीक्षा ली जाती है।

एनास्टासी (1961) के अनुसार ''शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त सफलता के स्तर का वह मूल्यांकन है जो विद्यार्थियों के शैक्षिक निर्देशों को समझने के प्रयास एवं उनके स्तर व आयु के अनुसार निर्धारित पाठ्यक्रम के लक्ष्यों की प्राप्ति से अभिव्यक्ति होता है।''

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारक निम्न है – सामाजिक, आर्थिक, चिकित्सा, स्वास्थ्य, पाविारिक, स्कूल के बाहरी दोस्त शिक्षकों और छात्रों की उम्मीदों, क्षमता, लोकप्रियता का स्तर आदि।

शोध के उद्देश्य

- किशोरों की सांवेगिक बुद्धिलब्धि ज्ञात करना।
- सांवेगिक बुद्धि का किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

अध्याय की रूपरेखा

Group I : निम्न सांवेगिक बुद्धि लब्धि और निम्न बुद्धि लब्धि वाले किशोर

Group II : निम्न सांवेगिक बुद्धि लब्धि और उच्च बुद्धि लब्धि वाले किशोर

Group III: उच्च सांवेगिक बुद्धि लब्धि और निम्न बुद्धि लब्धि वाले किशोर

Group IV: उच्च सांवेगिक बुद्धि लब्धि और उच्च बुद्धि लब्धि वाले किशोर

परिकल्पना

- निम्न सांवेगिक बुद्धिलब्धि एवं निम्न बुद्धिलब्धि के स्तर वाले किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।
- निम्न सांवेगिक बुद्धि लब्धि एवं उच्च बुद्धि लब्धि के स्तर वाले किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।
- उच्च सांवेगिक बुद्धिलब्धि एवं निम्न बुद्धिलब्धि के स्तर वाले किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।
- उच्च सांवेगिक बुद्धि लब्धि एवं उच्च बुद्धि लब्धि के स्तर वाले किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में 40 विद्यालयों के छात्र–छात्राओं को शामिल किया गया। ये विद्यालय राजस्थान राज्य के चार जिलों–बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ और चूरू के राजकीय एवं गैर–राजकीय माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालय है। ये विद्यार्थी 14 से 17 वर्ष के आयु वाले है जिनका चुनाव किया गया।

उपकरण

- **संवेगात्मक बुद्धि** : विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिलब्धि का अध्ययन करने के लिए प्रो. एन. के चड्डा एवं दलीप सिंह के परीक्षण का प्रयोग किया हैं।
- **बुद्धिलब्धि :** विद्यार्थियों की बुद्धि लब्धि का अध्ययन करने के लिए डॉ. एस. एस. जलोटा का सामूहिक साधारण योग्यता परीक्षण का प्रयोग किया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण

प्रस्तुत शोध के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु निम्न सारणियों का वर्गीकरण किया गया।

- **निम्न सांवेगिक बुद्धिलब्धि एवं निम्न बुद्धिलब्धि के स्तर वाले किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन**

क्र.सं.	वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t मूल्य	सार्थकता स्तर
1	निम्न सांवेगिक बुद्धिलब्धि (किशोर)	245	168.42	19.44	0.057	असार्थक
2	निम्न बुद्धिलब्धि (किशोर)	238	36.19	2.60		

गणना करने पर टी का प्राप्त मूल्य 0.057 है जो कि टी तालिका के 0.05 स्तर से निम्न है, अतः शून्य परिकल्पना ''निम्न सांवेगिक बुद्धिलब्धि' एवं निम्न बुद्धिलब्धि के स्तर वाले किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि माध्यमिक स्तर और उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोरों की सांवेगिक बुद्धि एवं बुद्धिलब्धि का प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर नहीं पाया गया।

- **निम्न सांवेगिक बुद्धिलब्धि एवं उच्च बुद्धिलब्धि के स्तर वाले किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन**

क्र.सं.	वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t मूल्य	सार्थकता स्तर
1	निम्न सांवेगिक बुद्धिलब्धि (किशोर)	245	168.42	19.44	0.18	असार्थक
2	उच्च बुद्धिलब्धि (किशोर)	125	83.78	4.89		

गणना करने पर टी का प्राप्त मूल्य 0.18 है, जो कि टी तालिका मूल्य के 0.05 स्तर से निम्न है, अतः शून्य परिकल्पना निम्न सांवेगिक बुद्धि लब्धि एवं उच्च बुद्धि के स्तर वाले किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि किशोरों की संवेगात्मक बुद्धिलब्धि एवं बुद्धिलब्धि का प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर नहीं पाया गया।

- **उच्च सांवेगिक बुद्धिलब्धि एवं निम्न बुद्धिलब्धि के स्तर वाले किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन**

क्र.सं.	वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t मूल्य	सार्थकता स्तर
1	उच्च सांवेगिक बुद्धिलब्धि (किशोर)	265	286.96	13.93	0.096	असार्थक
2	निम्न बुद्धिलब्धि (किशोर)	238	36.19	2.60		

गणना करने पर टी का प्राप्त मूल्य 0.096 है जो कि टी बालिका मूल्य के 0.05 स्तर से निम्न है, अतः शन्यू परिकल्पना ''उच्च सांवेगिक बुद्धिलब्धि एवं निम्न बुद्धिलब्धि के स्तर वाले किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता'' स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि किशोरों की संवेगात्मक बुद्धि लब्धि एवं बुद्धि लब्धि का प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर नहीं पाया गया।

- **उच्च सांवेगिक बुद्धि लब्धि एवं उच्च बुद्धि लब्धि के स्तर वाले किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन**

क्र.सं.	वर्ग	कुल संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	t मूल्य	सार्थकता स्तर
1	उच्च सांवेगिक बुद्धिलब्धि (किशोर)	265	286.96	13.93	0.246	असार्थक
2	उच्च बुद्धिलब्धि (किशोर)	125	83.78	4.89		

गणना करने पर टी का प्राप्त मूल्य 0.246 है, जो कि टी तालिका मूल्य के 0.05 स्तर से निम्न है अतः शून्य परिकल्पना ''उच्च सांवेगिक बुद्धिलब्धि एवं उच्च बुद्धिलब्धि के स्तर वाले किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता'' स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि किशोरों की संवेगात्मक बुद्धि लब्धि एवं बुद्धिलब्धि का प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष

सांवेगिक बुद्धिलब्धि एवं बुद्धिलब्धि के स्तर वाले किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता। इसका मुख्य कारण यह हो सकता है कि संवेगात्मक बुद्धि एवं बुद्धि दोनों भिन्न–भिन्न मनोवैज्ञानिक चर है बुद्धि ज्ञानात्मक पक्ष से सम्बन्धित होती है, वही संवेगात्मक बुद्धि भावनाओं एवं संवेगों से सम्बन्धित होती है। अतः यह दोनों स्वतंत्र रूप से अपना कार्य करती है। शैक्षिक उपलब्धि के रूप में हम किशोर विद्यार्थियों द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान का मूल्यांकन करते है। इस प्रकार शैक्षिक उपलब्धि का सम्बन्ध बुद्धि के साथ स्थापित किया जाता है, जबकि सांवेगिक बुद्धि का सम्बन्ध भावनात्मक पक्ष से है। सम्भवतः इसी कारण सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. मंगल एस. के. (2013) शिक्षा मनोविज्ञान, पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
2. शर्मा, आर. ए., ''मापन एवं मूल्यांकन'' मेरठ, लॉयल बुक डिपो, 1993
3. पाण्डेय, रामशकल, ''शैक्षिक मनोविज्ञान'', मेरठ, लाल. बुक डिपो, 1990
4. मंगल, एस. के., 'स्टेटिस्टिक्स इन साइकोलोजी एण्ड एजूकेशन'', न्यू देहली, प्रिंटस हॉल ऑफ इण्डिया, 2002
5. भार्गव, ऊषा, ''किशोर मनोविज्ञान'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1993
6. Goleman Daniel (1995) : Emotional Intelligence, Why it can matter more than IQ
7. Dr. Buch M.B., "Third Survey of Educational Research" (Vol. I), (1978-83), New Delhi
8. Journal of Youth and Adolescence (1991)
9. Chhavi : The National Journal of Higher Educational Vol. I, March 2013
10. Suresh, K.J. and Joshnath, V.P. (2008), Emotional Intelligence as a correlate of stress of student teachers, Edutracks, Vol. 7, No. 12, Nilkamal Publication, Hyderabad

❖◆❖